

Lalita Panchami Puja

Date : 5th February 1976
Place : Mumbai
Type : Puja
Speech : Hindi
Language

CONTENTS

I Transcript

Hindi	02 - 06
English	-
Marathi	-

II Translation

English	-
Hindi	-
Marathi	-

ORIGINAL TRANSCRIPT

HINDI TALK

इतना सब होते हुए भी बार बार इस तरह की बात बहुत से लोग मुझसे पुछते हैं हमारा क्या फायदा हुआ ? इस प्रश्न में निहित एक बहुत ही छोटी सी छुपी हुई बात है कि हमें जो कुछ मिला है उसके प्रति हमें कोई भी उपकार बुद्धि नहीं है। जरा सी भी उपकार बुद्धि नहीं है कि हम सोचते हैं कि हमने क्या सहज में ही पा लिया। उपकार बुद्धि जिसे sense of gratitude अंग्रेजी में कहते हैं जब तक आपके अन्दर होगा नहीं सब बात उलटी बैठती जाएगी।

आज का दिन बड़ा शुभ है। ललिता पंचमी है। ललित का मतलब है सुन्दर, अति सुन्दर और ललिता, गौरी जी का नाम है क्योंकि कल गणेशजी का जन्म हुआ है इसलिए आज गौरी जी का दिन मनाया जाता है। वैसे भी आप जानते हैं कि मेरी कुण्डलिनी माने कुण्डली का नाम ललिता है। लालित्य सौंदर्य को कहते हैं। मनुष्य वही सौंदर्य होता है, वही सुन्दरतम होता है जिसमें sense of gratitude होती है। जिस इन्सान में sense of gratitude जरा भी न हो वह इन्सान पशुवत है। पशु में भी होती है। कुत्ते में भी होती है। एक कुत्ता उसको आप थोड़े दिन पालिए-पोसिये देखिए आपको आश्चर्य होगा वो किस तरह वफ़ादार होता है। जैसे ही sense of gratitude आपके अन्दर जागृत होगा वैसे ही प्रेम के दर्शन अन्दर से आने शुरू हो जाते हैं। बहुत से लोग कहते हैं हम तो माँ आप को surrender हैं। मुझे हँसी आती है। मुझे क्या आप surrender होने जा रहे हैं। मैंने आप से तो कुछ माँगा नहीं था। मैं तो देने भर के लिए बैठी हूँ और ना मेरा कुछ वास्ता है। किन्तु यह जो परमात्मा है ना-वो जरूर आपको देखता है कि आप में कुछ उस उपकार की बुद्धि है या नहीं। जब नहीं है, मैं कुछ भी आपका recommendation करूँ वो सुनते नहीं हैं। इसलिए बहुत से लोग जो अपने को समझते हैं वो पार हैं, उनकी जागृति हो गयी है। वो बड़े evolve हो गये हैं। अभी वहीं पर है। बिलकुल यहीं चल रहे हैं। अपने अन्दर की उपकार बुद्धि लानी जरूरी है। उसके बगैर सब चीज़ अग्रि हो जाती है। लालित्य उस से खत्म हो जाता है। लालित्य ऐसे इन्सान में नहीं आता। लालित्य उसी इन्सान में होता है जिसमें sense of gratitude होता है, जिसमें उपकार बुद्धि होनी चाहिए।

आदमी पता नहीं कैसी अजीब इन्सान है, कैसी अजीब चीज़ है कि वो अपने से इस तरह से compromise कर लेता है वो अपने अन्दर का जो लालित्य है उसे भी नहीं पहचानता और अपने अन्दर की जो अग्लिनेस है उसके साथ रहता है हर दम। और वो सोचता है कि उसी के साथ रहने से वो बड़ा भारी आदमी, इन्सान होते चला जा रहा है। शुरू से ही देखिए, जन्म से ही देखिये परमात्मा ने हमारे लिये क्या नहीं किया। जानवर से हमें इन्सान बनाया। यह सारी सृष्टि कितनी मनोरम, कितनी सुन्दर और कितनी

व्यवस्थित हम लोगों के लिये बनायी है लेकिन हमें उनके प्रति कोई sense of gratitude नहीं है। हम तो taken for granted हैं। हाँ, दिया, जैसे कोई हम सब तो बड़े अधिकारी थे इन सब चीज़ के लिये कि मिल गया तो क्या हुआ। मनुष्य जब इस तरह की झूठी बातों में जीता है तब वो अपनी गंदगी भी नहीं देख सकता क्योंकि उसके लिये जो सच्चाई है वहीं दृष्टिगोचर नहीं होती। सच्चाई यह है कि आप अपनी गंदगी के साथ जी रहे हैं। आपके अन्दर जो गंदे तत्व हैं उन पर आप जी रहे हैं। उसको वो नहीं समझ पाता क्योंकि वो अंधा है और उस अंधेपन को ही बड़ी चीज़ समझ के, उसे compromise करते हैं। उसे हम लोग भूत कहें, बाधा कहे कुछ भी कहें। कुछ भी नाम दीजिए। ये आदत लग जानी चाहिए हमारे अन्दर, सब सहजयोगियों के अन्दर कि हमारी गन्दगी की हम सफाई करें। जैसे कि हमारी आदत है हाथों को कुछ गंदा लग जाता है तो फौरन हाथ धो लेते हैं। यह तो मनुष्य सीख कर आया है। जानवर फौरन अपने हाथ नहीं धोता है। मनुष्य हाथ जल्दी से धो लेगा, नहा लेगा जल्दी से। सफाई कर लेगा अपनी शरीर की। लेकिन इस मन के अन्दर कितनी गन्दगी हमारे अन्दर बसी हुई है, जिसके साथ हम जी रहे हैं और जन्मजन्मांतर तक हम जीते रहेंगे। आप गर सोचते हो कि इसी जन्म में खत्म हो जाएगी तो ये सही नहीं। ये गन्दगी जन्म जन्मांतर तक चलेगी और उस जगह पहुँचा देगी जो महान गंदी चीज़ है जिसे कि हम नर्क कहते हैं।

आज इतना सुन्दर दिन है कि मैं उस नर्क की आपको पूर्ण कल्पना देने, ना ही उसके बारे में बातचीत करना चाहती हूँ। लेकिन गंदी से गंदी कोई चीज़ अगर आपके अनुभव में होगी जिसको देखते ही आपने तय की होगी इस तरह की वो जगह जो अपने अन्दर आप बना रहे हैं। हाँ, माँ ने हमें जागृति दी है, ठीक है। मानते हैं हम। माँ ने हमें पार किया, मानते हो। फिर क्या? आगे? मानते हो माने मेरे उपर कोई उपकार कर रहे हैं क्या? इस तरह से लोग बातचीत करते हैं माने मेरे ऊपर उपकार हुआ जा रहा है। ऐसे लोगों का evolution कैसे हो सकता है?

आज हम यहाँ हवन करने वाले हैं विष्णु जी का। अब ये हवन क्या है इसे समझ लेना चाहिए। जो मनुष्य निर्मल मन से यहाँ बैठा हुआ है उसी पे उसका असर आने वाला है और जो अशुद्ध मन से यहाँ बैठा हुआ है उस पर कोई असर नहीं आने वाला है। उसके लिये ये व्यर्थ चीज़ है। हवन या पूजा, प्रार्थना, नमाज, मन्त्रोच्चार, तन्त्र आदि सबकुछ। तन्त्र माने जो गंदी चीज़ है वो नहीं। कुण्डलिनी itself। ये सबकुछ हमें उस राह का मार्ग प्रदर्शन करते हैं। उस राह को आलोचित करते हैं जिस पर हमें उठना है। एकदम से चमका देती है। ट्रिगरिंग हो जाता है। अपने जीवन में एकदम से वो चीज़ ट्रिगर हो जाती है। जैसे हम एकदम कूद जाते हैं। इस सीमित जीवन से हम असीम में एकदम से कूद जाते हैं।

हवन में श्री विष्णु का हवन। सारे बम्बई शहर के लिए इसका फायदा है क्योंकि मैं अपने हाथों से आज करने वाली हूँ। श्री विष्णु के हवन का मतलब ये होता है कि श्री विष्णु ही हमारे evolution के, हमारे उत्क्रांति के संयोजक। वे स्वयं ही उठकर के श्री कृष्ण बने। श्री विष्णु के इस अनुष्ठान को हम सारे संसार में

ट्रिगर कर देते हैं, उस में चमक डाल देते हैं। उसमें एक नई तरह की तरंगें उठा सकते हैं, जिससे मनुष्य की दृष्टि अपने evolution की ओर जायें कि और जिस तीन डायमेंशन में, जिस तीन चक्करों में वो फँसा है उसके बंधनों से, उसके बाँडेज से वो छूट जाए। लेकिन यह भी समझना चाहिए परमात्मा को गुलाम लोगों से कुछ मिलने वाला नहीं है। जो गुलाम हैं वो परमात्मा को क्या नमस्कार कर सकते हैं? उस सारे ही बंधनों को छोड़ने के लिए, उस सभी चीज़ों को छोड़ने के लिए आप में ताकत नहीं है ये हम जानते हैं। लेकिन तैयारियाँ आप रखें, फेंक हम देंगे। आज से तैयारी रखें कि 'जो जो मैं अपने अन्दर झूठ लिये बैठा हूँ उसे मैं फेंक दूँगा।'।

सहजयोग का आप कल्याण नहीं कर सकते हैं। आपको कल्याण करना है सहजयोग से। आप अपने को सोचते हैं कि हम सहजयोग के कल्याण के लिए यहाँ आये है तो आप बहुत बड़ी गलतफहमी में है क्योंकि सहजयोग साक्षात् परमात्मा का साक्षात्कार है। इससे जिसे लेना है, जिसे बढ़ना है वही आगे जा सकता है और जो देने यहाँ आयेगा वो कुछ भी यहाँ नहीं पा सकता। देना तो दूसरी बात है। सहजयोग के प्रति उपकृत होना चाहिए। उपकृत होने का मतलब अन्दर भावना ये होनी चाहिए कि आपके बड़े उपकार है, इतनी कृपा हमारे उपर हुई कि हम पार हो गये। कुण्डलिनी का पूर्ण साक्षात्कार हमें हुआ और हम उँगलियों के इशारे पर कुण्डलिनियाँ उठा रहे हैं। क्या मजाल है किसीकी इस तरह से कर सकें। बातें करने वाले बहुत देखे होंगे आपने, लेकिन कुण्डलिनियों को उँगलियों पर नचाने वाले ये जो आप लोग यहाँ बैठे हुये हैं पता होना चाहिए कि परमात्मा के प्रति किस कदर उसके आगे झुकना चाहिए और उसके उपकार मानना चाहिए कि 'हे प्रभू, हमारी क्या, ऐसी कौन सी हमारी विशेष बात थी कि तुमने हमारे उपर इतना उपकार किया? किसलिए इस तरह से आप हमारे उपर धर आये हैं प्रभू? क्या हमारी हस्ती थी? हमने क्या किया? आखिर कौन से ऐसे पुण्य हमने जोड़े थे जिसके लिये तुम इस तरह से हमारे उपर धर आये और सारी कुण्डलिनी हमारे सामने खोल के रख दी।' उसका सारा का सारा सूक्ष्म से सूक्ष्म ज्ञान आप लोगों में है। मूर्खों की बात छोड़ दीजिए। महामूर्खों की बात आप करते हैं, जो कि अपने को सोचते हैं कि हम बड़े हो गये हैं। आप लोग यहाँ उल्लू बनने आये हैं या अकलमन्द बनने आये हैं ये सोच के आये। मैं आपको यहाँ उल्लू बनाने नहीं आयी हूँ या आपको एनटाइसमेन्ट में डालकर आपको उल्लू बनाकर और आप लोगों को चढ़ाती हूँ? वास्तविक में आपको चढ़ना होगा उस सीढ़ी पर। एक ही तरीका है, आधे अधूरे मन से ना आईये। पूरे मन से समर्पण में। पूरे मन से कि प्रभू तुमने कितना दिया हमें। हम क्या करें तुम्हारे? दुनिया की चीज़ें माँगते हैं कभी कभी। सत्ता माँगते हैं, पैसा माँगते हैं। छोटी छोटी चीज़ों में आप लोग अभी तक उलझे हुये हैं। जिस परम तत्त्व की मैं बात करती हूँ वो सभी चीज़ देखने वाला है। योग, क्षेम, वहाम्यहम्। कह दिया है देख लेगा आपका। और ऐसी कौन सी चीज़ें हैं जो उससे बढ़के संसार में हैं। इस परम तत्त्व से बढ़कर ऐसी कौनसी चीज़ दुनिया में है जो उसकी तुलना में खड़ी भी हो सकती है। जिस तत्त्व के सहारे सारा संसार चल रहा है।

उसके अन्दर डूब जाने पर, उस अमृत को पाने के बाद आप क्या नहाने का पानी पीने की बातचीत करिएगा मुझसे? इसलिए आपके ऊपर उसके आशीर्वाद की जो छाया है वो आपको महसूस नहीं है। उसका पता नहीं लगता। क्योंकि आप अभी भी किनारे पर डूबकियाँ मार रहे हैं। आज श्री विष्णु के इस सत्र में पूर्ण यहीं ध्यान रखिए कि ये आपके evolution के लिये किया जा रहा है? मुझे कोई जरूरत नहीं है। इतना ही नहीं आज बम्बई शहर में, वातावरण में यह तरंगे जाकर चमकायेंगे। इन तरंगों की वजह से सारे बम्बई शहर में जो विष्णुमयी उत्क्रांति की चिनगारियाँ जलेंगी। इसको समझ लेना चाहिए यह बड़ी महत्वपूर्ण चीज़ है। हो सकता है आज आप लोग दस-पाँच आदमी बैठे हैं, लेकिन आप सब का पूरा चित्त यहाँ होना चाहिए। पूरी तरह से आप यहाँ concentrate करिए। इधर उधर मत देखिए। एक आदमी आता है आपकी आँख उधर घुमती है। आपका चित्त यहाँ रखिए। पूरी तरह से अपने को समर्पित रखें। जब आप लोग माँगेंगे तभी होगा। आप लोगों के माँगे बगैर नहीं होने वाला। मेरे करने से कुछ नहीं होता। अवतरण भी सबका माँगा हुआ होता है। जब तक कोई माँगता नहीं तो यहाँ किसी को फुर्सत नहीं अवतरण लेने की, आफत करने की। अवतरण में ही समझ लेना चाहिए कि आपकी माँग है। लेकिन माँगने वाले इतने अधुरे क्यों हो? पूरी तरह से अपने चित्त को इधर लाएं। पूरा चित्त यहाँ समर्पित रखें और आज का जो हमारा हवन है बहुत यशस्वी हो सकता है। इससे बहुत कार्य हो सकते हैं। लन्दन में हमने ऐसा ही एक हवन किया था। उसका बड़ा ही परिणाम लन्दन में आया। एकदम आबोहवा बदल गयी। आपकी आबोहवा बदलने की जरूरत है। इससे यहाँ का जो atmosphere है वो जाग्रत हो जाएगा। कभी-कभी इतने ज्यादा वाइब्रेशन्स मेरे शरीर में से बहते हैं लेकिन वह वातावरण में जा नहीं पाते। क्योंकि वातावरण उसे ले नहीं पा रहा है। आप लोग भी पूर्णतः जाग्रत अपने वाइब्रेशन पहले ठीक कर लें। नतमस्तक हो करके आवाहन करें। और जब उनका अवतरण हो, जब वो जाग्रत हो तब आप उसे अन्दर लें। जितनी भी यहाँ पर सामग्रियाँ हैं, उन सामग्रियों के द्वारा आप उनके सामने से ये कह रहे हैं कि हम आप से उपकृत हैं। आपके हमारे उपर अनेक उपकार है। ये हम दिखा रहे हैं आपको। ये लीजिए लकड़ियाँ जो आपने हमें दी, हम आपको दे कर दिखा रहे हैं। हम कैसे बतायें! ये है। हवन का मतलब ये है। और उसी के साथ-साथ उस उपकार बुद्धि के कारण, उस sense of gratitude के कारण आपके अन्दर जितना भी मैल है, जलने दीजिए इस अग्नि में। और ये अग्नि आपको पवित्र कर सकती है, अगर आप इस भावना से इन चीज़ों को यहाँ दे रहे हैं। कुछ कठिन काम नहीं है। कोई मुश्किल चीज़ नहीं है। हम तो हैं आप के साथ खड़े हुए। हर एक चीज़ देखने के लिये, हर एक चीज़ को जानने के लिये। कभी आपको समझाते हैं, कभी आपको डाँटते, कभी आपको प्यार करते, जैसे कि माँ को करना चाहिए। बच्चों को समझना चाहिए कि माँ अगर हमारे भले के लिये कुछ कह रही है तो ये माँ ही कर सकती है और कोई कर ही नहीं सकता। ये आपके परम भाग्य है, ऐसा सोचना चाहिए और उपकार मानने चाहिए इस चीज़ से। जरूरत है क्योंकि इस सब के पीछे है माँ का प्यार, उसको आपको पहचानना चाहिए। आपको अगर प्यार की पहचान नहीं है सहजयोग आपके लिए व्यर्थ है क्योंकि सारा ही ये प्यार ही का दर्शन है। आपस में एक

दूसरे में उस प्यार का आपको दर्शन होता है। लेकिन जब तक पूर्ण चित्त स्वच्छ कर के आप दूसरों के दर्पण में अपने को नहीं देख पाएंगे उस प्यार को भी आप पहचान नहीं पाएंगे। आप तो अपना जो विद्रुप रूप है वही दूसरे में देखकर दूसरों को विद्रुप समझते हैं। आशा है, मुझे आशा है, अब मैं भी आप जैसी बातचीत करने लगी हूँ कि इस यज्ञ से, इस हवन से हम लोगों के हृदय स्वच्छ हो जाएं और हमारे उत्क्रांति में बहुत मदद मिलेगी। और उस असीम के किनारे में आप जाकर इस तरह से टिक जाईयेगा कि वहाँ से लौटने की बातचीत नहीं होगी।

आज बड़ा शुभ दिन है और गणेश जी की बात समझ लेनी चाहिए। गणेश सिवाय अपने माँ के और संसार में किसी चीज़ को नहीं जानते और इसलिए सबसे उच्चतम स्थान पर वे बैठे हुए हैं। माँ के प्रति पूरी तरह, क्या उनकी माँ ने उन्हें कभी डाँटा नहीं होगा? क्या उन्होंने उनको कभी समझाया नहीं होगा?

हर चीज़ को शिरोधार्य करने वाले उस गणेश का स्मरण कर के हम लोग अब अपने हवन को पूरी तरह से संपन्न करेंगे और आप लोग भी इसमें पूरी तरह सम्मिलित हो और शंका कुशंका करते हुए न बैठियेगा। क्योंकि आप में से अधिकतर लोग पार है। जो लोग पार नहीं है उनको भी फायदा होगा। जरूर होगा, अवश्य होगा।

आप सबको अनन्त आशीर्वाद !